International Journal of Advanced Educational Research
www.educationjournal.org
ISSN: 2455-6157
Received: 01-09-2022, Accepted: 17-09-2022, Published: 03-10-2022
Volume 7, Issue 2, 2022, Page No. 91-94

विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का महत्व और इनका क्रियान्वयन

जितेंद्र कुमार
लेक्चरर हिंदी, शिक्षा निदेशालय, राजकीय उच्चतम माध्यमिक बाल विद्यालय (आरडीजेके), दिल्ली, भारत

सारांश
शिक्षा द्वारा नागरिकों में ऐसे गुणों का विकास किया जाता है, जिससे समाज के लिए वांछनीय योग्यताएं विकसित की जा सकें। पाठ्य सहगामी क्रियाएँ/गतिविधियाँ विद्यार्थियों के मौलिक चिंतन को जाग्रत करने के साथ ही जीवन में नयापन लाती हैं, जिससे विद्यार्थियों में एक नई उमंग और उत्साह का संचार होता है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए पाठ्य सहगामी क्रियाओं को भलीभाँति पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया गया है। भारत के विभिन्न शिक्षा आयोगों ने विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए पाठ्य सहगामी क्रियाओं को महत्व दिया। जिससे उनमें मानसिक विकास, शारीरिक विकास, भावनात्मक विकास, टीम भावना का विकास, नैतिक विकास, नेतृत्व विकास, साहसिक क्षमताओं का विकास, अनुशासन की आदत का विकास, चारित्रिक विकास, आत्मविश्वास का विकास, सृजनात्मक क्षमताओं का विकास, राष्ट्र सेवा की भावना का विकास, अभिप्रेरणा का विकास, राष्ट्रीय एकता का विकास, सामाजिक विकास, उत्तरदायित्व की भावना का विकास, सांस्कृतिक विकास, नागरिकता का विकास आदि। इनका क्रियांवयन इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देता है। विभिन्न स्तरों पर क्रियान्वयन हेतु प्रशिक्षित और इच्छापूर्ण व्यक्तित्व को भी ध्यान में रखने की आवश्यकता है जिससे उद्देश्यों की प्राप्ति उत्कृष्ट रूप में संभव हो सके।

मूल शब्दः पाठ्य सहगामी क्रियाएँ/गतिविधियाँ।, पाठ्य सहगामी क्रियाओं/गतिविधियों का महत्व।, छात्रों/विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास।, पाठ्य सहगामी क्रियाओं/गतिविधियों का क्रियान्वयन, पाठ्य सहगामी क्रिया/ गतिविधि के रूप में स्काउटिंग, पाठ्य सहगामी क्रिया/गतिविधि के रूप में/नेशनल केडेट कोर/एनसीसी, पाठ्य सहगामी क्रिया/गतिविधि के रूप में राष्ट्रीय सेवा योजना/एनएसएस।

प्रस्तावना
शिक्षा समाज में परिवर्तन लाने का एक सशक्त माध्यम है, शिक्षा द्वारा ही नागरिकों में ऐसे गुणों का विकास किया जाता है, जिससे सभ्य समाज की वांछनीय आवश्यकताएं पूर्ण हो सके । डॉ राधाकृष्णन ने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का साधन मानते हुए कहा है कि, "शिक्षा परिवर्तन का साधन है, जो कार्य साधारणतया समाज में, परिवार, धर्म, सामाजिक और राजनैतिक संस्थाओं द्वारा किया जाता है, वही आज शिक्षा संस्थाओं द्वारा किया जाता है।" इसी क्रम में डीवी के अनुसार, "शिक्षा ही एक ऐसा साधन है, जो किसी समाज को प्रगति की ओर ले जा सकती है।" कक्षाओं में ज्ञानात्मक पक्ष का विकास पूर्ण कर लिया जाता है, किंतु कहीं न कहीं भावात्मक व क्रियात्मक ज्ञान की उपेक्षा हो जाती है, इसी के उन्मूलन हेतु पाठ्यक्रम में पाठ्यसहगामी क्रियाओं को सम्मिलित किया गया है। भारत के विभिन्न शिक्षा आयोगों ने पाठ्य सहगामी क्रियाओं के महत्व को ध्यान में रखते हुए पाठ्य पुस्तक ज्ञान के साथ–साथ इन गतिविधियों के क्रियान्वयन पर बल दिया है। माध्यमिक शिक्षा आयोग का विचार है कि ये क्रियाएँ विद्यार्थियों को अपने वैयक्तिक गुणों, क्षमताओं तथा आत्मविश्वास को विकसित करने के लिए अवसर प्रदान करती हैं। इनके साथ ही ये विद्यार्थियों में अनुशासन एवं नेतृत्व के सहयोगी गुणों का विकास करती हैं। विद्यालयों में इस तरह की अनेक गतिविधियाँ जैसे स्काउटिंग, एनसीसी, एनएसएस, फर्स्टएड, स्पोर्ट्स, संगीत, वाद–विवाद, भाषण, शैक्षिक भ्रमण आदि के क्रियान्वयन के लिए समय–समय पर लगातार प्रयास किए गए हैं। माध्यमिक शिक्षा आयोग ने स्काउटिंग के महत्व को इन शब्दों में व्यक्त किया है– " स्काउटिंग चारित्रिक प्रशिक्षण तथा अच्छी नागरिकता के गुणों के विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण साधनों में से एक है। इसमें बहुत से गुण निहित हैं, क्योंकि इसके द्वारा विभिन्न आयु के बालकों को अपनी ओर आकर्षित किया जाता है तथा उनकी बहुमुखी शक्तियों को विकसित किया जाता है। इसके विभिन्न खेलों, क्रियाओं तथा प्राविधिक कुशलताओं द्वारा समाज–सेवा के आदर्शों, सदाचरण, नेताओं के लिए सम्मान, राज्य के प्रति भक्ति तथा प्रत्येक प्रकार की स्तिथि का सामना करने की तत्परता की आधारशिला रखना संभव है। कई राज्यों में इन गतिविधियों में सहभाग करने वाले विद्यार्थियों को अंक अधिभार भी दिया जाने लगा है, जिससे विद्यार्थी इन गतिविधियों की तरफ आकर्षित हुए हैं।

पाठ्य सहगामी क्रियाओं का महत्व
विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के बिना रुचिपूर्ण अध्ययन की परिकल्पना भी नजर नही आती। ये गतिविधियाँ विद्यार्थियों के मौलिक चिंतन को जाग्रत करने के साथ ही जीवन में नयापन लाती हैं, जिससे विद्यार्थियों में एक नई उमंग और उत्साह का संचार होता है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए पाठ्य सहगामी क्रियाओं को भलीभाँति पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया गया है । यह सर्वविदित है कि पाठ्य सहगामी क्रियाएँ विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में किस प्रकार महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यहाँ कुछ मुख्य बिंदुओं से यह स्पष्ट समझा जा सकता है।

मनोरंजन– विद्यार्थी पुस्तकीय ज्ञान के साथ–साथ पाठ्यसहगामी क्रियाओं से रिक्रिएट (मनोरंजन) होंगे जिससे उनमें विषय के प्रति उदासीनता भी समाप्त होगी। वे शैक्षिक उद्देश्यों को भलीं भाँति अपने व्यवहार में उतार पाएँगे।

रुचि का विकास– रुचि सीखने की प्रक्रिया का मूलभूत आधार है। कोई भी कार्य तभी सम्पादित किया जा सकता है, जब उसे करने में रुचि हो, अन्यथा वह कार्य अपने उद्देश्य के साथ न्याय नहीं कर पाता। पाठ्य सहगामी क्रियाएँ विद्यार्थियों में रुचि विकसित करने का सशक्त माध्यम हैं। इन गतिविधियों में विभिन्न कौशलों का विकास संभव है। ये विभिन्न रुचियाँ और कुशलताएँ ही विद्यार्थियों के जीवन में उपयोगी भूमिका निभाती हैं।

टीम भावना/सहयोग का विकास– विद्यार्थियों द्वारा समूह में कार्य करने से टीम भावना और सहयोगी भावना का विकास स्वतः ही प्रस्फुटित होता है। इन क्रियाओं से विद्यार्थियों के संपर्क का क्षेत्र व्यापक होता है। जिससे इन्हें सहयोग की भावना के समुचित अवसर मिलते हैं।

नैतिक विकास– किसी भी राष्ट्र को नैतिक मूल्यों के माध्यम से उन्नति के मार्ग पर लाया जा सकता है। पाठ्य सहगामी क्रियाएँ विद्यार्थियों को नैतिक रूप से सशक्त बनाती है। जिससे उनके व्यवहार में सकारात्मक बदलाव देखे गए हैं।

नेतृत्व विकास– विभिन्न अवसरों पर विद्यार्थियों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभागी बनने पर नेतृत्व का विकास सहज ही हो जाता है। जहाँ उन्हें नेतृत्व करने के अनेक अवसर मिलते हैं। जैसे स्काउटिंग में टोली नायक/दल नायक आदि।

साहसिक क्षमताओं का विकास– इन क्रियाओं के माध्यम से विद्यार्थियों में साहसिक विकास के लिए कुछ गतिविधियाँ सम्मिलत की जाती हैं, जिससे विद्यार्थियों में साहसिक प्रवृति का विकास स्वाभाविक रूप से होता है।

अनुशासन की आदत का विकास– इन गतिविधियों से विद्यार्थियों में स्व अनुशासन का भाव जागृत होता है। जैसे स्काउटिंग में नियम व प्रतिज्ञा के द्वारा स्व अनुशासन का व्यवहार तैयार किया जाता है और एनसीसी का उद्देश्य वाक्य ही 'एकता और अनुशासन' है।

चारित्रिक विकास– इन गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थी का चारित्रिक विकास सहज ही विकसित होता है। विद्यार्थी नैतिक मूल्यों के बल पर चारित्रिक रूप से सुदृढ और संकल्पित व्यवहार को अपनाते हैं।

आत्मविश्वास का विकास– पाठ्य सहगामी क्रियाएँ विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को उन्नत करती हैं, जब विद्यार्थियों को विभिन्न माध्यमों से स्वयं को अभिव्यक्त करने का अवसर मिलता है या यों कहें कि उन्हें अपना ही एक मंच मिलता है, तब वे अपने विचारों को अभिव्यक्त करने में और अधिक सक्षम होते हैं। भूमिका निर्वाह, विषय प्रस्तुति, प्रोजेक्ट वॉइस जैसे कार्यक्रम इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं, जहाँ विद्यार्थी वाद– विवाद, एक्सटेम्पोर, एंकरिंग आदि के माध्यम से अपने आत्मविश्वास को बलिष्ठ होते देख रहे हैं।

मौलिक एवं सृजनात्मक क्षमताओं का विकास– विभिन्न गतिविधियों में सम्मिलित होने के कारण विद्यार्थियों में मौलिक एवं सृजनात्मक क्षमताओं का विकास के लिए पर्याप्त अवसर मिलते हैं। स्काउटिंग में दक्षता बैज इसका महत्वपूर्ण उदाहरण है। साथ ही वाद– विवाद, कला प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता आदि द्वारा ये क्षमताएँ विकसित होती रही हैं।

स्वयंसेवक/राष्ट्र सेवा की भावना का विकास– विभिन्न सामुदायिक गतिविधियों के द्वारा विद्यार्थियों में समाजसेवा की भावना का विकास सुनिश्चित होता है। जिससे विद्यार्थी समाज व राष्ट्र के लिए स्वयं को स्वयंसेवक के रूप में तैयार कर लेते हैं। इससे विभिन आपदाओं और राष्ट्र हित के कार्यों में इनका महत्वपूर्ण योगदान मिलता है।

अभिप्रेरणा का विकास– विद्यार्थी अनेक आयोजनों में प्रतिभागी बनते हैं, जहाँ इन्हें मंच या साथियों से कुछ न कुछ अभिप्रेरणा मिलती है। जो इनके लिए टर्निंग पॉइंट का काम करती है। कहा भी गया है कि 'अभिप्रेरणा अधिगम का महामार्ग है'।

धर्मनिरपेक्षता व राष्ट्रीय एकता का विकास– विद्यार्थी मिलजुलकर कार्य करने से जाति, धर्म, सम्प्रदाय आदि के भाव से मुक्त होकर केवल और केवल एक सहयोगी के रूप में कार्य करते हैं, जिससे उनमें धर्मनिरपेक्षता के साथ–साथ राष्ट्रीय एकता का भाव भी जाग्रत होता है। डॉ राधाकृष्णन के शब्दों में राष्ट्रीय एकता ईंटों और प्लास्टर से नही बनाई जा सकती है, यह छैनी या हथोड़े से भी नही बनाई जा सकती, इसे चुपचाप लोगों के दिलों में उतपन्न होना है। शिक्षा प्रक्रिया ही इसका एकमात्र माध्यम है।" पाठ्य सहगामी क्रियाएँ इस दिशा में कारगर सिद्ध हुई हैं।

सामाजिक विकास– सामाजिक विकास शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है । यह सर्वविदित है कि विद्यालय समाज का लघु रूप है, जहाँ विद्यार्थी को समाज में समायोजित होने के गुण सिखाने का क्रम अनवरत चलता रहता है। समाज सेवा शिविर, स्काउटिंग, एनएसएस, स्कूल, रेडक्रॉस आदि के द्वारा विद्यार्थियों में सामाजिक विकास आसानी से किया जा सकता है।

शारीरिक विकास– इन गतिविधियों से विद्यार्थियों को शारीरिक विकास के समुचित अवसर मिलते हैं जैसे स्काउटिंग में बीपी सिक्स व्यायाम/सूर्य नमस्कार अभ्यास, तैराकी, एनसीसी में शारीरिक गतिविधियाँ, एनएसएस में श्रमदान, खेलकूद में

शारीरिक भागदौड़ आदि। ये सब गतिविधियाँ विद्यार्थियों के शारीरिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं । कहा भी गया है कि 'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण होता है।'

प्रशंसा की संस्कृति का विकास– विद्यार्थियों के उत्कृष्ट कार्यों के लिए उनकी प्रशंसा, उन्हें यथासामर्थ्य कार्य के लिए प्रेरित करती है, पाठ्यसहगामी क्रियाओं में प्रशंसा की संस्कृति सभी विद्यार्थियों में उत्कृष्ट प्रतियोगी होने का भाव भी जाग्रत करती है। जैसे स्काउट ताली द्वारा हर्ष के भाव को दर्शाया जाता है।

उत्तरदायित्व की भावना का विकास– पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभागिता द्वारा विद्यार्थियों में उत्तररदायित्व का भाव स्वतः तैयार होता जाता है, जिससे उनमें भविष्य में भी उनके द्वारा निष्पादित कार्यों में उत्तरदायित्व स्पष्ट रूप से झलकता है। यह राष्ट्र की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

आयु विशेष की आवश्यकताओं की पूर्ति करने का माध्यम– विद्यार्थियों की प्रत्येक आयु अवस्था कुछ न कुछ विशेषताओं के साथ जीवन का निर्वाह करती है। जैसे किशोरावस्था तनाव, तूफान व संघर्ष की अवस्था के रूप में परिभाषित है। यह आयु मानसिक विकारों या अवसादों से ग्रस्त होकर यदि दिकभ्रमित हो जाए तब विद्यार्थी का जीवन कुंठाग्रस्त हो जाता है। पाठ्य सहगामी क्रियाएँ विद्यार्थियों को रचनात्मक दिशा प्रदान कर उनके जीवन को उज्ज्वल बनाती हैं, जिससे समस्त विश्व को इसका लाभ मिलना सुनिश्चित ह।

सांस्कृतिक विकास– पाठ्य सहगामी क्रियाएँ विद्यार्थियों में सांस्कृतिक विकास का सशक्त माध्यम बनकर उभरी हैं। स्काउटिंग का कैम्प फायर, स्कूलों की सांस्कृतिक गतिविधियाँ, एनसीसी व एनएसएस के शिविर आदि में पूरे भारत से आए विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का मंचन और अभिनय उन्हें सांस्कृतिक रूप से सशक्त बनाता है।

नागरिकता का विकास– पाठ्य सहगामी क्रियाओं की सहायता से विद्यार्थियों में ऐसे गुणों का विकास संभव है जिनसे श्रेष्ठ नागरिकता का भाव विकसित होता है। विद्यार्थियों को अपने अधिकार व दायित्वों का अनुभवजन्य व व्यावहारिक ज्ञान इन्ही गतिविधियों से मिलता है, जो उन्हें उत्कृष्ट नागरिक के रूप में तैयार करती हैं। इन गुणों के माध्यम से ही वे स्वयं , परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व समुदाय के उत्कृष्ट नागरिक के रूप में पहचाने जाते हैं।

अवकाश के समय का सदुपयोग– पाठ्य सहगामी क्रियाएँ अवकाश के समय का सदुपयोग करने का सशक्त माध्यम बनकर उन्हें सुयोग्य नागरिक बनने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। स्काउट शिविर में विद्यार्थियों को स्पेयर टाइम एक्टिविटी के रूप के लिए तैयार किया जाता है। वे अतिरिक्त समय में अपनी रुचि के अनुसार कोई भी गतिविधि जैसे वाद विवाद, पेंटिंग, संगीत, गायन, खेल आदि के द्वारा समय का सदुपयोग करना सीखते हैं। विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे अवकाश के समय का सदुपयोग रचनात्मक कार्यों में करें, जिससे उनके कौशलों का विकास सुनिश्चित हो सके।

विभिन्न स्तरों पर इनका क्रियांवयन

पाठ्य सहगामी क्रियाओं का महत्व सर्वविदित है। इनके द्वारा विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित है। इन्हें पाठ्यक्रम का पूरक व आवश्यक अंग माना गया है। समय–समय पर नेतृत्व का ध्यान इस ओर आकृष्ट हुआ है और सुखद परिणाम भी देखने को मिले हैं। किंतु इनके क्रियान्वयन में बड़ी बाधा तब आती है, जब किसी अनिच्छित व्यक्ति को इनका प्रभार सौंप दिया गया हो/प्रशिक्षण न दिया गया हो। विद्यालयों/संस्थाओं को चाहिए कि इन गतिविधियों के समुचित क्रियांवयन के लिए ऐसे व्यक्ति को प्रभार सौंपा जाए, जो शिक्षण के साथ–साथ मार्गदर्शन और गतिविधियों को समुचित स्थान दिला सके। साथ ही यह भी विशेष ध्यान देने जरूरत है कि इन छात्रों की पाठ्य पुस्तक संबंधी गुणवत्ता शिक्षा इन्हें मिलती रहे। पाठ्य सहगामी क्रियाएँ गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जोकि सतत विकास उद्देश्य (SDG) में परिभाषित की गयी हैं।

हमें यह जान लेना आवश्यक है कि विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास केवल पाठ्य पुस्तकों के ज्ञान से संभव नही है। इसके लिए हमें अपनी शिक्षण अधिगम व्यवस्था में इन गतिविधियों को समुचित स्थान देना होगा । ऐसा देखा जाता है कि विषय अध्यापकों को इस बात का डर सताता है कि विद्यार्थी इन गतिविधियों में शामिल होकर पाठ्य पुस्तक कंटेंट को शत–प्रतिशत कैसे पूर्ण कर पायेगा? उनका यह डर प्राप्त अनुभवों से सही भी हो सकता है। फिर भी हमें इसके समुचित क्रियांवयन के लिए रास्ते खोजने होंगे, जिससे इन गतिविधियों को औपचारिकता से हटकर उचित सम्मान मिल सके और साथ ही राष्ट्र को उपयोगी नागरिक।

विद्यालयों, जिलों, राज्यों को इन गतिविधियों के समुचित क्रियान्वयन के लिए ऐसे नोडल अधिकारी की नियुक्ति की ओर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है, जो विद्यार्थियों की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए पाठ्य सहगामी क्रियाओं में एक कड़ी के रूप में स्थापित हो सके, जिससे हमारे विद्यार्थी निश्चित ही सतत विकास के क्रियात्मक रूप को आत्मसात करने में सक्षम होंगे। दिल्ली के साथ कई राज्यों के विद्यालय इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं । जहाँ सदन व्यवस्था, क्लब व्यवस्था, उत्कृष्ट कार्य की प्रशंसा की संस्कृति, प्रोजेक्ट वॉइस के माध्यम से छात्रों की अभिव्यक्ति के विकास के साथ साथ सर्वांगीण विकास सुनिश्चित किया जा रहा है।

यहाँ यह कहा जा सकता है कि मन दुनिया का सबसे बड़ा ग्रंथ है, जिसे केवल भावना प्रधान और समर्पित व्यक्तित्व ही समझ सकता है। इस व्यक्तित्व को उस प्रत्येक शिक्षक/व्यक्ति में देखा जा सकता है, जो नागरिकों के सर्वाङ्गीण विकास के लिए प्रतिबद्ध हैं।

संदर्भ सूची

1. डॉ ए बी भटनागर एवं डॉ अनुराग भटनागर, शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार (2014)
2. डॉ आर ए शर्मा, तुलनात्मक शिक्षा, आर लाल बुक डिपो।
3. डॉ आर ए शर्मा, अध्यापक शिक्षा एवं प्रशिक्षण तकनीकी, आर लाल बुक डिपो (2009)
4. एन आर स्वरूप, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, आर लाल बुक डिपो (2010)